Report of the

Three days Training on

"Fish Health Management"

Under SCSP program

Organized by:

ICAR-CIFE, Mumbai

In collaboration with

KVK, Mungeli

at Farhada, Mungeli District, Chhattisgarh

on 27.02.2025-01:03:2025

A three days training program on "Fish Health Management" under SCSP program was conducted by ICAR-CIFE Mumbai in collaboration with KVK, Mungeli, Chhattisgarh from 27/02/2025 to 01/03/2025 at Farhada, Mungeli District, Chhattisgarh,. The training program were conducted under the guidance of Dr. Ravishankar C.N., Director and Vice-Chancellor, Dr. N.P. Sahu, Joint Director, Dr. Megha Kadam Bedekar, Head of the AEHM Division, and Dr. Sukham Munilkumar, Nodal Officer SCSP of ICAR-CIFE, Mumbai. Thirty farmers (male: 16 and female: 14) from the different parts of Mungeli have participated in the training program. Dr. Arun Sharma, Senior Scientist and coordinator welcomed all the dignitaries and the participants. Dr. R.L. Sharma, Senior Scientist and Head KVK Mungeli, and the chief guest of the programme emphasized the importance aquaculture and role of fish health management in fish farming and appreciated the effort of ICAR-CIFE, Mumbai for conducting such programme. During the program, two training manuals on "Fish diseases and their Management" (English and Hindi) were released. The training programme were comprises of class lecture, practical demonstration and filed visit. On the second day of the training, the beneficiaries of the training program were taken for a farm visit to a Pangasius cage farm run by a progressive fish farmer to gain practical exposure to cage culture and management. The training was concluded with an interactive discussion, addressing farmer queries. The farmers expressed keen interest in follow-up training programs and continued technical guidance for better fish health management. 20,000 advanced fish fingerlings comprising of Catla: 8000, Rohu: 6000 and Mrigal: 6000 nos. were distributed among the fish farmers. The programme was coordinated by Dr. Arun Sharma, and Dr. Jeena K., Dr. Saloni Shivam, and Dr. Pradeep Kumar Singh.The local newspapers covered the training programme.

फरहदा में मत्स्य रोग प्रबंधन पर 30 किसानों व महिला समूहों को दी ट्रेनिंग

भास्कर न्यूज | मुंगेली

केन्द्रीय मात्स्यकीय शिक्षा संस्थान, मुम्बई और कृषि विज्ञान केंद्र, मुंगेली के संयुक्त तत्वावधान में अनुसूचित जाति उपयोजना के तहत ग्राम फरहदा में तीन दिवसीय मत्स्य रोग प्रबंधन प्रशिक्षण शुरू हुआ। पहले दिन वैज्ञानिक डॉ. अरुण शर्मा ने कृषकों और महिला समूहों को मत्स्य स्वास्थ्य प्रबंधन की विस्तृत जानकारी दी।

डॉ. जीना ने मछलियों में बैक्टीरिया और विषाणु जनित रोगों के उपचार पर जानकारी दी। डॉ. सलोनी शिवम ने मछलियों में परजीवियों से होने वाले रोगों और उनके नियंत्रण पर चर्चा की। वरिष्ठ वैज्ञानिक और कृषि विज्ञान केंद्र प्रमुख डॉ. आर. एल. शर्मा ने छत्तीसगढ़ में मत्स्य विकास के महत्व को बताया।

मत्स्य विज्ञान विशेषज्ञ डॉ. प्रदीप सिंह ने तालाब प्रबंधन की जानकारी दी। मृदा विज्ञान विशेषज्ञ डॉ. थानेश्वर कुमार ने मछली पालन में मृदा स्वास्थ्य के मह[illegible] पर चर्चा की। प्रशिक्षण में [illegible] कृषकों और महिला समूहों ने [illegible] लिया। सभी ने मत्स्य पालन [illegible] आधुनिक तकनीकों की जान[illegible] प्राप्त की।

ग्राम फरहदा में मत्स्य रोग प्रबंधन पर प्रशिक्षण देते हुए।

मछलियों के रोगों के बारे में की गई चर्चा

नईदुनिया न्यूज, मुंगेली : केंद्रीय मात्स्यकीय शिक्षा संस्थान, मुम्बई द्वारा कृषि विज्ञान केंद्र, मुंगेली के संयुक्त तत्वावधान में अनुसूचित जाति उपयोजना के तहत मत्स्य रोग प्रबंधन विषय पर फरहदा में तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।

प्रशिक्षण के पहले दिन केंद्रीय मात्स्यकीय शिक्षा संस्थान, मुंबई के वैज्ञानिक डा. अरुण शर्मा ने कृषकों एवं महिला समूहों को मत्स्य स्वास्थ्य प्रबंधन पर विस्तृत जानकारी दी। डा. जीना ने मछलियों में होने वाले वैक्टीरिया एवं विषाणु जनित रोगों और उनके उपचार के बारे में बताया, जबकि डा. सलोनी शिवम ने मछलियों में परजीवियों से होने वाले रोगों और उनके नियंत्रण पर चर्चा की। प्रमुख कृषि विज्ञान केंद्र डा. आरएल शर्मा ने छत्तीसगढ़ में मत्स्य विकास के महत्व पर प्रकाश डाला। मत्स्य विज्ञान विशेषज्ञ डा. प्रदीप सिंह ने तालाबों के प्रबंधन की जानकारी दी।

ग्राम फरहदा में मत्स्य रोग प्रबंधन पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण शुरू

कोमल देवांगन जिला ब्यूरो

मुंगेली (सुघर गांव)। केन्द्रीय मात्स्यकीय शिक्षा संस्थान, मुम्बई द्वारा कृषि विज्ञान केंद्र, मुंगेली के संयुक्त तत्वाधान में अनुसूचित जाति उपयोजना के तहत मत्स्य रोग प्रबंधन विषय पर ग्राम फरहदा में तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। प्रशिक्षण के पहले दिन केन्द्रीय मात्स्यकीय शिक्षा संस्थान, मुम्बई के वैज्ञानिक डॉ. अरुण शर्मा ने कृषकों एवं महिला समूहों को मत्स्य स्वास्थ्य प्रबंधन पर विस्तृत जानकारी दी।

डॉ.जीना ने मछलियों में होने वाले बैक्टीरिया एवं विषाणु जनित रोगों और उनके उपचार के बारे में बताया, जबकि डॉ. सलोनी शिवम ने मछलियों में परजीवियों से होने वाले रोगों और उनके नियंत्रण पर चर्चा की।

वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख कृषि विज्ञान केंद्र डॉ.आर.एल. शर्मा ने छत्तीसगढ़ में मत्स्य विकास के महत्व पर प्रकाश डाला। मत्स्य विज्ञान विशेषज्ञ डॉ. प्रदीप सिंह ने तालाबों के प्रबंधन की जानकारी दी। मृदा विज्ञान विशेषज्ञ डॉ. थानेश्वर कुमार ने मछली पालन के लिए मृदा स्वास्थ्य के महत्व पर चर्चा की। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 30 कृषकों एवं महिला समूहों ने भाग लिया और मत्स्य पालन से जुड़ी आधुनिक तकनीकों की जानकारी प्राप्त किया।

ग्राम फरहदा में मत्स्य रोग प्रबंधन पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण शुरू

मुंगेली(समय दर्शन) केन्द्रीय मात्स्यकीय शिक्षा संस्थान, मुम्बई द्वारा कृषि विज्ञान केंद्र, मुंगेली के संयुक्त तत्वाधान में अनुसूचित जाति उपयोजना के तहत मत्स्य रोग प्रबंधन विषय पर ग्राम फरहदा में तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। प्रशिक्षण के पहले दिन केन्द्रीय मात्स्यकीय शिक्षा संस्थान, मुम्बई के वैज्ञानिक डॉ. अरुण शर्मा ने कृषकों एवं महिला समूहों को मत्स्य स्वास्थ्य प्रबंधन पर विस्तृत जानकारी दी।

डॉ. जीना ने मछलियों में होने वाले बैक्टीरिया एवं विषाणु जनित रोगों और उनके उपचार के बारे में बताया, जबकि डॉ. सलोनी शिवम ने मछलियों में परजीवियों से होने वाले रोगों और उनके नियंत्रण पर चर्चा की। वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख कृषि विज्ञान केंद्र डॉ. आर. एल. शर्मा ने छत्तीसगढ़ में मत्स्य विकास के महत्व पर प्रकाश डाला। मत्स्य विज्ञान विशेषज्ञ डॉ. प्रदीप सिंह ने तालाबों के प्रबंधन की जानकारी दी। मृदा विज्ञान विशेषज्ञ डॉ. थानेश्वर कुमार ने मछली पालन के लिए मृदा स्वास्थ्य के महत्व पर चर्चा की। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 30 कृषकों एवं महिला समूहों ने भाग लिया और मत्स्य पालन से जुड़ी आधुनिक तकनीकों की जानकारी प्राप्त की।

मत्स्य रोग प्रबंधन पर दिया गया प्रशिक्षण

लोरमी @पत्रिका. केन्द्रीय मात्स्यकीय शिक्षा संस्थान, मुम्बई द्वारा कृषि विज्ञान केंद्र, मुंगेली के संयुक्त तत्वावधान में अनुसूचित जाति उपयोजना के तहत मत्स्य रोग प्रबंधन विषय पर ग्राम फरहदा में तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।

प्रशिक्षण के पहले दिन वैज्ञानिक डॉ. अरुण शर्मा ने कृषकों एवं महिला समूहों को मत्स्य स्वास्थ्य प्रबंधन पर विस्तृत जानकारी दी। डॉ. जीना ने मछलियों में होने वाले बैक्टीरिया एवं विषाणु जनित रोगों और उनके उपचार के बारे में बताया। जबकि डॉ. सलोनी शिवम ने मछलियों में परजीवियों से होने वाले रोगों और उनके नियंत्रण पर चर्चा की। वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख कृषि विज्ञान केंद्र डॉ. आर. एल. शर्मा ने छत्तीसगढ़ में मत्स्य विकास के महत्व पर प्रकाश डाला। मत्स्य विज्ञान विशेषज्ञ डॉ. प्रदीप सिंह ने तालाबों के प्रबंधन की जानकारी दी। मृदा विज्ञान विशेषज्ञ डॉ. थानेश्वर कुमार ने मछली पालन के लिए मृदा स्वास्थ्य के महत्व पर चर्चा की। प्रशिक्षण में 30 कृषकों एवं महिला समूहों ने भाग लिया।

<u>एससीएसपी कार्यक्रम के तहत आयोजित तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम की रिपोर्ट</u>

प्रशिक्षण कार्यक्रम :" मछली स्वास्थ्य प्रबंधन"

आयोजक: आईसीएआर-सीआईएफई, मुंबई , केवीके, मुंगेली, छत्तीसगढ़ के सहयोग से आयोजित

स्थान: फरहदा, मुंगेली, छत्तीसगढ़

दिनांक: 27.02.2025-01:03:2025 (तीन दिवस)

दिनांक 27.02.2025-01:03:2025 को छत्तीसगढ़ के मुंगेली जिले के फरहदा में SCSP कार्यक्रम के तहत "मछली स्वास्थ्य प्रबंधन" पर एक तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन आईसीएआर-सीआईएफई, मुंबई, द्वारा केवीके, मुंगेली, छत्तीसगढ़ के सहयोग से आयोजित किया गया था। यह कार्यक्रम डॉ. रविशंकर सी.एन., निदेशक और कुलपति, डॉ. एन.पी. साहू, संयुक्त निदेशक, डॉ. मेघा कदम बेडेकर, AEHM विभाग की प्रमुख, और डॉ. सुखम मुनीलकुमार, ICAR-CIFE, मुंबई के SCSP नोडल अधिकारी की दिशा-निर्देश में आयोजित किया गया था। मुंगेली जिले के तीस किसान (पुरुष: 16 और महिला: 14) इस कार्यक्रम में शामिल हुए थे। डॉ. अरुण शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक और समन्वयक ने सभी सम्मानित मेहमानों और प्रतिभागियों का स्वागत किया था। डॉ. आर.एल. शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक और केवीके मुंगेली के प्रमुख, और कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ने एक्वाकल्चर के महत्व और मत्स्य पालन में मछली स्वास्थ्य प्रबंधन की भूमिका पर जोर दिया और मुंबई के आईसीएआर-सीआईएफई द्वारा इस तरह के कार्यक्रम का आयोजन करने के प्रयास की सराहना की थी। कार्यक्रम के दौरान "मछली बीमारियाँ और उनका प्रबंधन" (अंग्रेजी और हिंदी) पर दो प्रशिक्षण मैन्युअल का विमोचन किया गया था। प्रशिक्षण कार्यक्रम में कक्षा व्याख्यान, व्यावहारिक प्रदर्शन और एक्सपोजर विजिट शामिल थी। प्रशिक्षण के दूसरे दिन, प्रशिक्षण कार्यक्रम के लाभार्थियों को एक प्रगतिशील मत्स्य किसान द्वारा संचालित पांगासियस पिंजरे वाले फार्म की यात्रा पर ले जाया गया ताकि पिंजरा मछली पालन और प्रबंधन का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त किया जा सके। प्रशिक्षण का समापन एक इंटरैक्टिव चर्चा के साथ हुआ, जिसमें किसानों के प्रश्नों का समाधान किया गया था। किसानों ने अनुवर्ती प्रशिक्षण कार्यक्रमों और बेहतर मछली स्वास्थ्य प्रबंधन के लिए निरंतर तकनीकी मार्गदर्शन में गहरी रुचि व्यक्त की थी। 20,000 उन्नत मछली के बीज , जिनमें कैतला: 8000, रोहू: 6000 और मृगल: 6000 नंबर शामिल थे, मछली किसानों में वितरित किए गए थे। कार्यक्रम का समन्वय डॉ. अरुण शर्मा, डॉ. जीना के., डॉ. सैलोनी शिवम और डॉ. प्रदीप कुमार सिंह ने किया था।

फरहदा में मत्स्य रोग प्रबंधन पर 30 किसानों व महिला समूहों को दी ट्रेनिंग

भास्कर न्यूज | मुंगेली

केन्द्रीय मात्स्यकीय शिक्षा संस्थान, मुम्बई और कृषि विज्ञान केंद्र, मुंगेली के संयुक्त तत्वावधान में अनुसूचित जाति उपयोजना के तहत ग्राम फरहदा में तीन दिवसीय मत्स्य रोग प्रबंधन प्रशिक्षण शुरू हुआ। पहले दिन वैज्ञानिक डॉ. अरुण शर्मा ने कृषकों और महिला समूहों को मत्स्य स्वास्थ्य प्रबंधन की विस्तृत जानकारी दी।

डॉ. जीना ने मछलियों में बैक्टीरिया और विषाणु जनित रोगों के उपचार पर जानकारी दी। डॉ. सलोनी शिवम ने मछलियों में परजीवियों से होने वाले रोगों और उनके नियंत्रण पर चर्चा की। वरिष्ठ वैज्ञानिक और कृषि विज्ञान केंद्र प्रमुख डॉ. आर. एल. शर्मा ने छत्तीसगढ़ में मत्स्य विकास के महत्व को बताया।

मत्स्य विज्ञान विशेषज्ञ डॉ. प्रदीप सिंह ने तालाब प्रबंधन की जानकारी दी। मृदा विज्ञान विशेषज्ञ डॉ. थानेश्वर कुमार ने मछली पालन में मृदा स्वास्थ्य के मह पर चर्चा की। प्रशिक्षण में कृषकों और महिला समूहों ने लिया। सभी ने मत्स्य पालन आधुनिक तकनीकों की जान प्राप्त की।

ग्राम फरहदा में मत्स्य रोग प्रबंधन पर प्रशिक्षण देते हुए।

मछलियों के रोगों के बारे में की गई चर्चा

नईदुनिया न्यूज, मुंगेली : केंद्रीय मात्स्यकीय शिक्षा संस्थान, मुम्बई द्वारा कृषि विज्ञान केंद्र, मुंगेली के संयुक्त तत्वावधान में अनुसूचित जाति उपयोजना के तहत मत्स्य रोग प्रबंधन विषय पर फरहदा में तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।

प्रशिक्षण के पहले दिन केंद्रीय मात्स्यकीय शिक्षा संस्थान, मुंबई के वैज्ञानिक डा. अरुण शर्मा ने कृषकों एवं महिला समूहों को मत्स्य स्वास्थ्य प्रबंधन पर विस्तृत जानकारी दी। डा. जीना ने मछलियों में होने वाले वैक्टीरिया एवं विषाणु जनित रोगों और उनके उपचार के बारे में बताया, जबकि डा. सलोनी शिवम ने मछलियों में परजीवियों से होने वाले रोगों और उनके नियंत्रण पर चर्चा की। प्रमुख कृषि विज्ञान केंद्र डा. आरएल शर्मा ने छत्तीसगढ़ में मत्स्य विकास के महत्व पर प्रकाश डाला। मत्स्य विज्ञान विशेषज्ञ डा. प्रदीप सिंह ने तालाबों के प्रबंधन की जानकारी दी।

ग्राम फरहदा में मत्स्य रोग प्रबंधन पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण शुरू

कोमल देवांगन जिला ब्यूरो

मुंगेली (सुघर गांव)। केन्द्रीय मात्स्यकीय शिक्षा संस्थान, मुम्बई द्वारा कृषि विज्ञान केंद्र, मुंगेली के संयुक्त तत्वाधान में अनुसूचित जाति उपयोजना के तहत मत्स्य रोग प्रबंधन विषय पर ग्राम फरहदा में तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। प्रशिक्षण के पहले दिन केन्द्रीय मात्स्यकीय शिक्षा संस्थान, मुम्बई के वैज्ञानिक डॉ. अरुण शर्मा ने कृषकों एवं महिला समूहों को मत्स्य स्वास्थ्य प्रबंधन पर विस्तृत जानकारी दी।

डॉ.जीना ने मछलियों में होने वाले बैक्टीरिया एवं विषाणु जनित रोगों और उनके उपचार के बारे में बताया, जबकि डॉ. सलोनी शिवम ने मछलियों में परजीवियों से होने वाले रोगों और उनके नियंत्रण पर चर्चा की।

वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख कृषि विज्ञान केंद्र डॉ.आर.एल. शर्मा ने छतीसगढ़ में मत्स्य विकास के महत्व पर प्रकाश डाला। मत्स्य विज्ञान विशेषज्ञ डॉ. प्रदीप सिंह ने तालाबों के प्रबंधन की जानकारी दी। मृदा विज्ञान विशेषज्ञ डॉ. थानेश्वर कुमार ने मछली पालन के लिए मृदा स्वास्थ्य के महत्व पर चर्चा की। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 30 कृषकों एवं महिला समूहों ने भाग लिया और मत्स्य पालन से जुड़ी आधुनिक तकनीकों की जानकारी प्राप्त किया।

ग्राम फरहदा में मत्स्य रोग प्रबंधन पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण शुरू

मुंगेली(समय दर्शन) केन्द्रीय मात्स्यकीय शिक्षा संस्थान, मुम्बई द्वारा कृषि विज्ञान केंद्र, मुंगेली के संयुक्त तत्वाधान में अनुसूचित जाति उपयोजना के तहत मत्स्य रोग प्रबंधन विषय पर ग्राम फरहदा में तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। प्रशिक्षण के पहले दिन केन्द्रीय मात्स्यकीय शिक्षा संस्थान, मुम्बई के वैज्ञानिक डॉ. अरुण शर्मा ने कृषकों एवं महिला समूहों को मत्स्य स्वास्थ्य प्रबंधन पर विस्तृत जानकारी दी।

डॉ. जीना ने मछलियों में होने वाले बैक्टीरिया एवं विषाणु जनित रोगों और उनके उपचार के बारे में बताया, जबकि डॉ. सलोनी शिवम ने मछलियों में परजीवियों से होने वाले रोगों और उनके नियंत्रण पर चर्चा की। वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख कृषि विज्ञान केंद्र डॉ. आर. एल. शर्मा ने छत्तीसगढ़ में मत्स्य विकास के महत्व पर प्रकाश डाला। मत्स्य विज्ञान विशेषज्ञ डॉ. प्रदीप सिंह ने तालाबों के प्रबंधन की जानकारी दी। मृदा विज्ञान विशेषज्ञ डॉ. थानेश्वर कुमार ने मछली पालन के लिए मृदा स्वास्थ्य के महत्व पर चर्चा की। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 30 कृषकों एवं महिला समूहों ने भाग लिया और मत्स्य पालन से जुड़ी आधुनिक तकनीकों की जानकारी प्राप्त की।

मत्स्य रोग प्रबंधन पर दिया गया प्रशिक्षण

लोरमी @पत्रिका. केन्द्रीय मात्स्यकीय शिक्षा संस्थान, मुम्बई द्वारा कृषि विज्ञान केंद्र, मुंगेली के संयुक्त तत्वावधान में अनुसूचित जाति उपयोजना के तहत मत्स्य रोग प्रबंधन विषय पर ग्राम फरहदा में तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।

प्रशिक्षण के पहले दिन वैज्ञानिक डॉ. अरुण शर्मा ने कृषकों एवं महिला समूहों को मत्स्य स्वास्थ्य प्रबंधन पर विस्तृत जानकारी दी। डॉ. जीना ने मछलियों में होने वाले बैक्टीरिया एवं विषाणु जनित रोगों और उनके उपचार के बारे में बताया। जबकि डॉ. सलोनी शिवम ने मछलियों में परजीवियों से होने वाले रोगों और उनके नियंत्रण पर चर्चा की। वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख कृषि विज्ञान केंद्र डॉ. आर. एल. शर्मा ने छत्तीसगढ़ में मत्स्य विकास के महत्व पर प्रकाश डाला। मत्स्य विज्ञान विशेषज्ञ डॉ. प्रदीप सिंह ने तालाबों के प्रबंधन की जानकारी दी। मृदा विज्ञान विशेषज्ञ डॉ. थानेश्वर कुमार ने मछली पालन के लिए मृदा स्वास्थ्य के महत्व पर चर्चा की। प्रशिक्षण में 30 कृषकों एवं महिला समूहों ने भाग लिया।